श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

'मंथन'

(हिंदी साहित्य सभा)

द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

"नामवर सिंह का आलोचना संसार"

9-11 फरवरी, 2022

समय-12:30

माध्यम - ज़ूम

/SGNDKHALSA MANTHAN

MANTHANSGNDKHALSA

/MANTHAN.SGNDKHALSA

लिंक : https://us02web.zoom.us/j/4392430802?pwd=SkNDcERIb0JVYkthVXBMSEdXSU5nZz09

प्रो. गुरमोहिंदर सिंह
(कार्यवाहक प्राचार्य)

डॉ. अंजु
(विभागाध्यक्ष)

महेन्द्र प्रताप सिंह
(संयोजक)

कार्यशाला के विषय में

अपने दैनिक जीवन में किसी न किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना पर टिप्पणी करना, उसकी समीक्षा या आलोचना करना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति में शामिल एक तत्त्व है। परंतु अलग-अलग धारणाओं, चिंतन क्षमता और संस्कारों के कारण इसमें एकरूपता बहुत कम या न के बराबर होती है। साहित्य-आलोचना भी इसी प्रकार की विभिन्न चिंतन क्षमताओं, धारणाओं और साहित्यिक संस्कारों से उत्पन्न होकर प्रतिफलित होती है। आरंभ से ही साहित्य लेखन के समानांतर आलोचना ने भी अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। हिंदी आलोचना ने हिंदी भाषा और साहित्य के साथ-साथ हिंदी समाज को भी गढ़ा है। अपनी इस यात्रा में अनेक पड़ावों को पार करते हुए आलोचना अब स्वतंत्र रचना का रूप ले चुकी है। रचना विशेष के गुण-दोष विवेचन से आगे बढ़कर आज हिंदी आलोचना रचना की विशेषताओं पर विचार करती है; उसकी उपलब्धियों का मूल्यांकन करती है; उसकी उपयोगिता के विषय में निर्णय देती है; रचनाओं को श्रेणीबद्ध करती है तथा इन सबसे आगे बढ़कर रचना को समझने में पाठक की मदद करती है।

इन विविध आयामों के अंतर्गत हिंदी आलोचना की एक सुदृढ़ परंपरा रही है तथा एक से बढ़कर एक आलोचकों ने हिंदी आलोचना को समृद्ध करने का कार्य किया। नामवर सिंह भी हिंदी आलोचना के एक ऐसे ही नाम हैं। अपने नाम के अनुरूप ही वे हिंदी साहित्य और आलोचना के 'नामवर' व्यक्तित्व थे, जिन्होंने हिंदी आलोचना के विकास को सुदृढ़ करने तथा उसे आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मार्क्सवाद और सौंदर्यशास्त्र में तारतम्य बनाते हुए हिंदी आलोचना को सुदृढ़ करने का कार्य नामवर सिंह ने किया। उन्होंने हिंदी आलोचना की 'एक नई परंपरा की खोज' की। आलोचना को वे 'वाद, विवाद और संवाद' की परंपरा का एक आयाम मानते थे। हिंदी आलोचना की वाचिक परंपरा में भी नामवर सिंह एक महत्त्वपूर्ण नाम के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित दिखाई देते हैं। नामवर सिंह निरंतर गतिशील और विकासशील आलोचक थे। लंबी साहित्यिक आलोचना-यात्रा में वे लगातार आत्मालोचन-रत भी रहे और स्वयं का परिमार्जन करते रहे। उनकी आलोचना इतनी तीक्ष्ण, तार्किक, तथ्यपरक तथा बहुआयामी है कि एक ओर वह समकालीन संदर्भों में पूर्णतः प्रासंगिक है, वहीं उसकी पुनर्व्याख्या और पुनर्विश्लेषण की भी पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

इस तीन-दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय कार्यशाला में हम अलग-अलग विद्वानों, विशेषज्ञों, प्राध्यापकों, शोधार्थियों एवं अकादमिक क्षेत्र से जुड़े लोगों के माध्यम से नामवर सिंह के आलोचना-कर्म की पुनर्व्याख्या और पुनर्विश्लेषण करेंगे और उनकी आलोचना प्रक्रिया को समझने का प्रयास करेंगे। साथ ही इस कार्यशाला के माध्यम से आलोचना की परंपरा, उसके उतार-चढ़ाव तथा उसके नए प्रतिमानों को समझने की कोशिश करेंगे।

कार्यशाला संबंधी निर्देश -

- आप सभी इस कार्यशाला में zoom माध्यम के जरिए जुड़ सकते हैं।
- शोध-आलेख प्रस्तुति के लिए प्रतिभागियों का चयन उनके द्वारा भेजे गए शोध-आलेखों की गुणवत्ता के आधार पर किया जाएगा।
- चयन हेतु शोध-आलेख 8 फरवरी, 2022 तक manthan@sgndkc.du.ac.in पर भेजे जा सकते हैं।
- शोध-आलेख कार्यशाला के विषय अथवा उपविषयों पर आधारित होने चाहिए।
- शोध-आलेख एमएस वर्ड फाइल एवं मंगल फोंट में कम से कम 1000 शब्दों में लिखा होना चाहिए।
- शोध-आलेख पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए। प्रतिभागी को शोध-आलेख के अप्रकाशित एवं मौलिक होने संबंधी स्वलिखित पत्र संलग्न करना होगा।
- शोध-आलेख प्रस्तुति हेतु चयनित प्रतिभागियों को 10 फरवरी, 2022 तक सूचित किया जाएगा।
- चयनित शोध-आलेख INTERNATIONAL PEER REVIEWED JOURNAL बोहल शोध मंजूषा (ISSN : 2395-7115, IMPACT FACTOR 5.6) में प्रकाशित किए जाएँगे।
- शोध-आलेख प्रस्तुति हेतु कोई शुल्क नहीं है, किन्तु शोध-आलेख प्रकाशित पुस्तक प्रस्तुतकर्ता को स्वयं क्रय करनी होगी।

नामवर सिंह का आलोचना संसार

प्रथम दिवस

उद्घाटन सत्र:
बीज-वक्तव्य
श्री अशोक वाजपेयी

प्रथम सत्र:
मार्क्सवाद, आलोचना और नामवर सिंह
वक्ता :-
श्री मदन कश्यप
प्रो. वीर भारत तलवार

द्वितीय दिवस

द्वितीय सत्र:
नामवर और काव्य-आलोचना के प्रतिमान
वक्ता:-
प्रो. गोपेश्वर सिंह
प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी

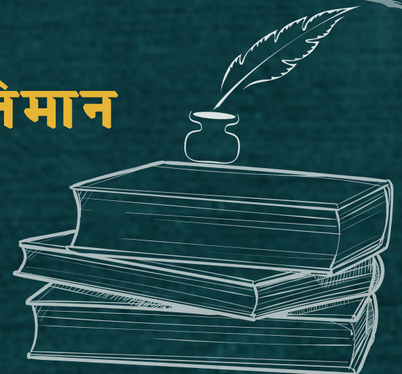

तृतीय सत्र:
कथा-समीक्षा का उत्कर्ष और नामवर
वक्ता:-
प्रो. चौथी राम यादव
प्रो. नित्यानंद तिवारी

तृतीय दिवस

चतुर्थ सत्र:
सम्पादन के निकष और नामवर सिंह
वक्ता:-
प्रो. अपूर्वानंद
प्रो. संजीव कुमार

समापन सत्र:
आलोचना की वाचिक परंपरा के नामवर
वक्ता:-
प्रो. निर्मला जैन
प्रो. विश्वनाथ त्रिपाठी

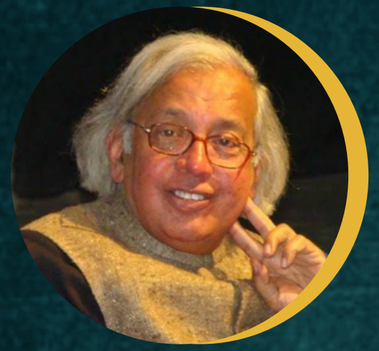

श्री अशोक वाजपेयी
वरिष्ठ कवि एवं चिंतक

श्री मदन कश्यप
कवि एवं आलोचक

प्रो. वीर भारत तलवार
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय
भाषा केंद्र, जेएनयू दिल्ली

प्रो. गोपेश्वर सिंह
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी
देशबंधु कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

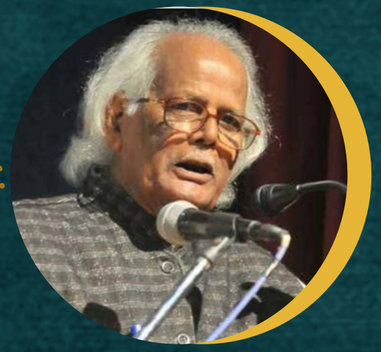

प्रो. चौथी राम यादव
वरिष्ठ आलोचक

प्रो. नित्यानंद तिवारी
वरिष्ठ आलोचक,
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. अपूर्वानंद
हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. संजीव कुमार
आलोचक एवं संपादक

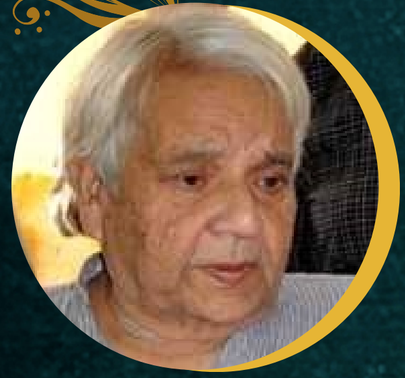

प्रो. विश्वनाथ त्रिपाठी
कथाकार एवं आलोचक

विशिष्ट वक्तागण

प्रो. निर्मला जैन
वरिष्ठ आलोचक
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

आयोजन समिति

समस्त हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

डॉ. अंजु
प्रभारी (हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)

महेन्द्र प्रताप सिंह
(संयोजक)

प्रो. गुरमोहिंदर सिंह
(कार्यवाहक प्राचार्य)

Notice

All students and Faculty members are cordially invited to attend the following Programme:

Nature of Event: कार्यशाला

Title of Event (if any): नामवर सिंह का आलोचना संसार

Organising Body: 'मंथन'

Department: हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

Date: 9-11 फ़रवरी, 2022

Time: दोपहर 12:30 बजे

Duration: 4 घंटे

Venue: ज़ूम

Link (if any):

https://us02web.zoom.us/j/4392430802?pwd=SkNDcERIb0JVYkthVXBMSEdXSU5nZz09

Signature:

Name: डॉ. अंजु

(प्रभारी)

हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग